# समंदर शांत हो गया

विसंगत। ख़ुद के साथ संगत हो जाए तब विसंगत हो जाना है, असंगतता तब है जब तुम ख़ुद के साथ ना हो, तुम तुम हो पर फिर भी तुम तुम ना हो, तब तुम ख़ुद ना हो, ,,,तो विसंगत हो जाए तब ख़ुद हो जाना है, फिर कोई भी नहीं, तब कंपेरिसन की बात नहीं है, अकेले हो जाना है,,,बहोत प्यारी बात है,,,आँख में आँसू भर आए, तब दूसरों के होने से तुम तुम ही हो, तब समंदर शांत हो गया,,लहरे मिट गयी,,,फिर दूसरा गाली देगा पर तुम तुम ही रहते हो, फिर कोई लहर नहीं तुम अपनी मस्ती में डूबें हो, फिर बदल आते है चले जाते है और तुम रुके हुए हो,

*Aasthit*